दिल्ली का राजनीतिक इतिहासः एक विश्लेषण

Ms. Reena
Research Scholar
Faculty of History
OPJ S University, Rajasthan

शोध–आलेख सार– वस्तुतः अधिकांश इतिहासकारों का मानना है कि दिल्ली का राजनीतिक इतिहास अविश्वसनीय रूप से विस्तृत और अनेकों राजनीतिक उतार–चढावों से परिपूर्ण है तथा इस सत्य से कोई इंकार भी नहीं कर सकता कि दिल्ली के भू–दृश्य में उसका इतिहास पत्थरों से निर्मित ऐतिहासिक सल्तनतकालीन और मुगलकालीन इमारतों के रूप में दर्ज है। इसके किलों, मस्जिदों और मकबरों में मध्यकालीन दिल्ली सजीव हो उठती है। कुतुबमीनार, लालकिला, हुमांयु का मकबरा, वायसराय का आवास, सचिवालय, चांदनी चौक की हवेलियां, निजामुद्दीन में शेख निजामुद्दीन औलिया की दरगाह, दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रवेश द्वार पर स्थित ध्वजखंड, कश्मीरी गेट स्थित संत जेम्स चर्च, दिल्ली कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, सेंट स्टीफन कॉलेज आदि दिल्ली की समृद्ध राजनीतिक विरासत की याद ताजा करते हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में दिल्ली के राजनैतिक इतिहास पर सक्षिप्त प्रकाश डाला गया है।

मूलशब्द– इतिहासकार, सल्तनतकालीन, मुगलकालीन, राजनैतिक विरासत, राजनैतिक इतिहास, प्रवासी शहर, पुरातत्व विभाग।

भूमिका– इस सत्य को कोई नकार नहीं सकता कि दिल्ली एक प्रवासी शहर है। बाहर से आकर बसने वाले लोगों की संख्या दिल्ली के मूल निवासियों की तुलना में अधिक है। बड़े पैमाने पर हुई प्रवास प्रक्रिया ने मतदाताओं के सामाजिक परिवेश को बदल दिया है। दिल्ली में प्रवासी मतदाताओं की संख्या अधिक है और इनका संबंध समाज के निम्न तथा गरीब आय वर्ग से है। वस्तुतः दिल्ली में बाहर से आकर बसने वाले मतदाताओं ने पिछले कुछ दशकों से दिल्ली की राजनीति को ही बदल दिया है। रोजगार की तलाश में उत्तरप्रदेश व बिहार से आए लोगों की संख्या दिल्ली में सबसे अधिक है। दिल्ली में भारत के विभाजन के दौरान आए शरणार्थियों की संख्या भी कम नहीं है। आज ये लोग उच्च और मध्यम आय वर्ग वाले हैं। इसके बावजूद आज दिल्ली अमीर लोगों का शहर न होकर मध्यम तथा निम्न आय वर्ग वाले लोगों का शहर है। प्रवास प्रक्रिया ने दिल्ली में गंदी बस्तियों तथा अवैध बस्तियों की संख्या में बढोतरी की है।

दिल्ली का नामकरण व इतिहास–दिल्ली के नामकरण को लेकर अनेकों किंवदंतियों और मिथक मौजूद हैं। परन्तु ये केवल मनोरंजक दावों और सम्बंधों का प्रतिबिम्ब मात्र है। भारतीय सभ्यता के इतिहास में कोई भी ऐसा ऐतिहासिक तथ्य नहीं है जो इसके नामकरण के दावे की पुष्टि करता हो। राजस्थानी चारण साहित्य में एक ऐसा उपाख्यान विद्यमान है जो राजपूत राजा अनंगपाल तोमर तथा एक सर्व राक्षस वासुकी को दिल्ली का संस्थापक मानता है और महरौली के लौह स्तंभ की स्थापना को इससे जोड़ता है। वास्तव में यह एक किंवदती ही है। वस्तुतः दिल्ली के प्राचीन इतिहास के स्रोत पुरातत्व विज्ञान में निहित है। दिल्ली के प्राचीन स्थलों के अवशेष मिट्टी के टीलों के रूप में आज भी विद्यमान हैं। इनके बारे में पुरातत्त्व विभाग द्वारा एकत्रित सूचनाएँ दिल्ली की राजनीतिक विरासत की जानकारी उपलब्ध करवाने के पुख्ता प्रमाण हैं।

दिल्ली के प्राचीन इतिहास की जानकारी प्राप्त करने के क्रम में 14वीं सदी के प्रारम्भ में दर्ज ग्रन्थों के सन्दर्भ में एक दृढ मान्यता से पता चलता है कि महाभारत के नायक पांडवों की राजधानी इन्द्रप्रस्थ पुराना किला नामक जगह पर ही स्थित थी। महाभारत में वर्णित इन्द्रप्रस्थ के विशाल सभागार का पुराना किले की खुदाई से प्राप्त जानकारी से मिलान करने से यह अकाट्य तथ्य सामने आता है। वास्तव में उत्तरी भारत में 600 ई. पू. शुरू हुए प्रारम्भिक ऐतिहासिक काल में दिल्ली एक महत्वपूर्ण व्यापारिक केन्द्र का दर्जा प्राप्त कर चुकी थी। नेहरू प्लेस के निकट श्रीनिवासपुरी में राजा धीरसिंह मार्ग के पास मौर्य सम्राट अशोक (269–32 ई. पू.) का शिलालेख भी इन सदियों के ग्वाह के रूप में मौजूद है।[1] यह एकमात्र ऐसा शिलालेख है जो अपने मूल स्थान पर है।

आज दिल्ली की पहचान देश की राजधानी और राजनीतिक व गतिविधियों के केन्द्र के रूप में है, वही स्थिति पूर्व–मध्यकाल में तोमर राजपूतों के समय थी। महरौली के लौह–स्तम्भ का संबंध भी इसी युग से जोड़ा जाता है। इस काल के अवशेष पुराना किला में प्राप्त हुए हैं। कुछ इतिहासकारों का मानना है कि दिल्ली का नामकरण भी इसी वंश के एक राजा से जुड़ा हुआ है। यहाँ यह बात तो स्पष्ट है कि दिल्ली पाषाण युग से ही आबाद रही है। विभिन्न तरह की ग्रामीण और शहरी बस्तियाँ यहां विकसित हुई। दिल्ली से मिलता–जुलता नाम ढिल्ली या दिहाली के रूप में तोमर राजा अनंगपाल का उल्लेख महरौली स्तम्भलेख में आता है जो दिल्ली को पूर्व मध्यकाल से जोड़ता है। 13वीं तथा 14वीं सदियों में भी इससे मिलते–जुलते नामों का उल्लेख हुआ है। 13वीं सदी का एक शिलालेख पालम गांव के एक बावली (सीढीदार कुँआ) से मिला है, जिसमें उल्लेख है कि ढिल्ली के एक व्यक्ति ने इसका निर्माण करवाया था।

[1] मोतीचन्द्र, **ट्रेड एण्ड ट्रेड रूटस इन एन्शिएंट इंडिया**, अभिनव पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 1977, पृ. 153.

नारायणा से प्राप्त 14वीं सदी के एक अभिलेख में दिल्ली को हरियाणा राज्य में तथा नारायणा गांव को इन्द्रप्रस्थ के पश्चिम में स्थित बताया गया है।[2]

अधिकांश इतिहासकारों का मानना है कि कुतुबद्दीन ऐबक द्वारा वर्ष 1191ई. में जिस महान मस्जिद का निर्माण कार्य शुरू कराया गया, उसका विस्तार उसके उत्तराधिकारियों ने किया। इस क्रम में दास वंश के अन्य राजा इल्तुतमिश तथा बलबन ने दिल्ली में मुस्लिम राज्य स्थापित करने के प्रयास किए। इस कार्य को जलालुद्दीन खिलजी नामक एक सरदार ने दिल्ली की सत्ता पर अधिकार करके मुस्लिम साम्राज्य की जड़ें मजबूत की। उसके बाद उसके भतीजे अलाउद्दीन ने दिल्ली सहित उत्तर भारत में अपने साम्राज्य का विस्तार किया। आगे चलकर मुहम्मदशाह द्वितीय के समय में तुर्क आक्रमणकारी तैमूरलंग ने दिल्ली में कत्लेआम किया। इससे दिल्ली का तख्त कमजोर पड़ गया। अन्ततः वर्ष 1412 में दिल्ली में तुगलक वंश समाप्त हो गया। वर्ष 1451 में पंजाब के सूबेदार बहलोल लोदी ने दिल्ली के तख्त पर कब्जा कर लिया। वर्ष 1526 में बाबर ने इब्राहिम लोदी को पानीपत के प्रथम युद्ध में परास्त करके दिल्ली की सत्ता पर अधिकार किया।[3] इससे भारत में मुगल साम्राज्य की नींव पड़ी।

16वीं सदी के मध्य में शेरशाह सूरी ने बाबर के बेटे हुमांयु को एक युद्ध में हरा दिया और दिल्ली में पुराना किला बनवाया। जब हुमांयु की मृत्यु हुई तो अकबर की आयु 14 वर्ष थी। इसी दौरान हेमू ने 1556 ई. में दिल्ली पर हमला कर दिया। अकबर के सेनापति बैरम खां ने हेमू को हरा दिया। आगे चलकर अकबर ने दिल्ली में मुगल साम्राज्य की जड़ें सुदृढ़ की और सभी धर्मों का सम्मान करते हुए उदारता का परिचय दिया। वर्ष 1605 में अकबर की मृत्यु के बाद जहांगीर ने दिल्ली की सत्ता संभाली। उसकी मृत्यु के बाद वर्ष 1627 में शहांजहां ने दिल्ली पर शासन किया। वर्ष 1658 में उसके पुत्र औरंगजेब ने उसे कैद करके दिल्ली की गद्दी पर अधिकार कर लिया। वर्ष 1750 के बाद तक भी दिल्ली और उसके आस–पास मुगलों का शासन रहा। यद्यपि इस दौरान दिल्ली और आगरा के आस–पास जाटों के छोटे–छोटे राज्य कायम हो चुके थे।

यद्यपि 1600 ई. में भारत में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी का आगमन हो चुका था। परन्तु भारत में ब्रिटिश शासन की जड़ें वर्ष 1857 की क्रांति के बाद काफी मजबूत हुई। चूंकि मुगल शासकों ने बड़ी क्रूरता से शासन किया, लेकिन ब्रिटिश कूटनीति के आगे उनकी हर चाल असफल रही। वर्ष 1752 में एक संधि के तहत मराठों को मुगल सत्ता का संरक्षक बनाया गया। वर्ष 1757 में मुहम्मदशाह अब्दाली ने दिल्ली पर हमला कर दिया। वर्ष 1761 में मराठों ने पानीपत के तीसरे युद्ध में हारने के बाद दिल्ली की सत्ता खो दी। इसके 10 वर्ष बाद उत्तर भारत में मराठा शक्ति का पतन हो गया और मुगल सम्राट शाह

[2] उपिन्द्र सिंह, **दिल्लीः प्राचीन इतिहास,** ओरियंट ब्लैकस्वॉन, नई दिल्ली, 2010, पृ. 22–23.
[3] गजानन माधव, **भारतः इतिहास और संस्कृति**, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014, पृ. 134–35.

आलम द्वितीय को दिल्ली की सत्ता का उत्तराधिकारी घोषित कर दिया। वर्ष 1803 में दूसरे आंग्ल–मराठा युद्ध में ईस्ट इंडिया कम्पनी का शासन रहा। वर्ष 1857 की क्रांति के दौरान मुगल सम्राट बहादुरशाह जफर द्वितीय को रंगून जेल में डाल दिया गया और दिल्ली सहित समस्त क्षेत्रों पर ब्रिटिश शासन स्थापित हो गया।[4]

20वीं सदी के प्रारम्भ में ब्रिटिश प्रशासन ने कलकत्ता के स्थान पर दिल्ली को ब्रिटिश शासन की राजधानी बनाने का प्रस्ताव पेश किया। दिल्ली उत्तर भारत के केन्द्र में थी और भारत में ब्रिटिश सरकार ने महसूस किया कि यहां से सम्पूर्ण भारत पर शासन करना आसान होगा। इसी कारण से वर्ष 1894 के भूमि अधिग्रहण अधिनियम के तहत दिल्ली के नए शहर के लिए भूमि अधिग्रहण का कार्य पूरा हुआ और 12 दिसम्बर 1911 को दिल्ली को ब्रिटिश भारत की राजधानी घोषित कर दिया गया।[5]

दिल्ली की नींव का पत्थर राजा जार्ज पंचम तथा रानी मेरी द्वारा रखा गया। नई दिल्ली के निर्माण की विस्तृत योजना एडविन लुटियन ने शुरू की। उन्होंने वर्ष 1912 में दिल्ली का दौरा किया। उसके बाद वर्ष 1926 में हरबर्ट बेकर भारत आए। ये दोनों 20वीं सदी के प्रसिद्ध ब्रिटिश वास्तुकार थे। इनके मार्गदर्शन में वर्ष 1931 तक नई दिल्ली के निर्माण का कार्य पूरा हो गया।

आजादी के बाद दिल्ली का राजनैतिक इतिहास– वर्ष 1947 में भारत की स्वतंत्रता के बाद दिल्ली को आंशिक स्वायत्तता दी गई और भारत सरकार द्वारा नियुक्त चीफ कमिश्नर को इसका प्रशासन चलाने का उत्तरदायित्व प्रदान किया गया। वर्ष 1956 में इसे संघीय क्षेत्र बना दिया गया और चीफ कमिश्नर के स्थान पर उप–राज्यपाल को इसका प्रशासकीय उत्तरदायित्व सौंपा गया। भारतीय संविधान के 69वें संविधान संशोधन –1991 के अन्तर्गत इसे राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र घोषित किया गया है। इस व्यवस्था को वर्ष 1993 से लागू किया गया है। अब दिल्ली में एक निर्वाचित सरकार है। जिसके पास शासन की शक्तियाँ है, यद्यपि कानून व्यवस्था का उत्तरदायित्व केन्द्र सरकार को दिया गया है।

दिल्ली ने केवल सामाजिक और सांस्कृतिक गतिविधियों का केन्द्र है, बल्कि यह राजनीतिक गतिविधियों का भी प्रमुख केन्द्र है। यहां स्वतन्त्रता के बाद अनेक आंदोलन, प्रदर्शन, रैलियां व धरने दिए गए और विभिन्न मुद्दों को राजनीतिक नेतृत्व के सामने प्रस्तुत किया गया। वर्ष 1975 में जे.पी. आन्दोलन जो आपातकाल के विरूद्ध था, इसी स्थान से शुरू किया गया। वर्ष 1990 में मंडल कमीशन की रिर्पोट के विरोध में व्यापक जन आन्दोलन की शुरूआत दिल्ली से हुई। वर्ष 2012 में अन्ना हजारे के नेतृत्व में

[4] **उपरोक्त,** पृ. 176.
[5] आर.ई. फ्राईकेनबर्ग, **दिल्लीः थ्रू दॉ एजिज,** आक्सफोर्ड यूनि. प्रैस, दिल्ली, 1993, पृ. 233.

भ्रष्टाचार विरोधी आन्दोलन तथा निर्भया बलात्कार कांड के विरोध में जन–आन्दोलन इसी जगह पर हुए।[6]

चुनावी राजनीति के अखाड़े में जब भारत में प्रथम आम चुनाव वर्ष 1952 में हुए तो दिल्ली के मतदाताओं को 7 सांसद चुनने का मौका मिला। अब तक हुए 16 लोकसभा चुनावों में दिल्ली की जनता ने बड़ी सजगता और जागरूकता के साथ मतदान किया है। इसके अतिरिक्त स्थानीय स्वशासन की संस्थाओं में भी जनसहभागिता की व्यापक भूमिका रही है। वर्ष 1993 में राज्य बनने के बाद दिल्ली की जनता ने 70 सदस्यीय विधानसभा के लिए मतदान किया। वर्ष 1993 में भारतीय जनता पार्टी ने दिल्ली में सरकार बनाई। उसके बाद वर्ष 1998, 2003 तथा 2008 में हुए दिल्ली विधानसभा चुनावों कांग्रेस ने अपनी पकड़ मजबूत की।[7]

लगातार 15 वर्षों तक श्रीमती शीला दीक्षित दिल्ली की मुख्यमंत्री रही। परन्तु वर्ष 2013 में हुए दिल्ली विधानसभा चुनावों में कांग्रेस की बुरी तरह से हार हुई और वह 8 सीटों तक सिमट गई। वर्ष 2013 में हुए दिल्ली विधानसभा चुनावों ने आश्चर्यजनक परिणाम दिए। इस दौरान दिल्ली के मतदाताओं का चुनावी व्यवहार बदलता हुआ प्रतीत हुआ। इसके चुनाव परिणामों ने चुनाव पूर्व सर्वेक्षणों को झुठला दिया। प्रथम बाद चुनावी मौसम में चुनावों में उतरी आम आदमी पार्टी (आप) को 28 सीटों पर विजय प्राप्त हुई। परन्तु वर्ष 2014 में हुए 16वीं लोकसभा चुनावों में आम आदमी पार्टी को एक भी सीट नहीं मिली। इसके बाद राजनीतिक पंडितों ने यह कहना शुरू कर दिया कि आम आदमी पार्टी का दिल्ली में जनाधार समाप्त हो चुका है। लेकिन वर्ष 2015 के दिल्ली विधानसभा चुनाव में आम आदमी पाटी ने 70 में से 67 सीटें जीतकर सभी को चौंका दिया।[8] यह दिल्ली के राजनीतिक इतिहास की सबसे अधिक अप्रत्याशित घटना है।

सारांश– इस प्रकार दिल्ली का राजनैतिक इतिहास अनेक उतार–चढाव के दौर से गुजरा है। आज दिल्ली में सल्तनतकालीन तथा मुगलकालीन समृद्ध भवन व इमारतें मौजूद हैं जो तत्कालीन समय के राजनैतिक इतिहास की याद ताजा करती हैं। पुरातात्विक विभाग के अनुसार भी दिल्ली की राजनैतिक विरासत को आज भी पहचाना जा सकता है। आज यह देश की राजधानी के रूप में पहचान रखती है तथा समस्त राजनीतिक गतिविधियों का केन्द्र बिन्दु है। इसे मूल रूप से प्रवासी शहर कहा जाता है।

---

[6] संजय कुमार, **चेन्जिंग ईलैक्ट्रोल पॉलिटिक्स इन इंडिया**, सेज पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 2013, पृ. 3.

[7] **उपरोक्त,** पृ. 3.

[8] आशीष कुमार, ''आम आदमी पार्टीः वर्तमान और भविष्य'', **कन्टेम्परेरि सोशल इश्यूजः एन इंटरनेशनल रिसर्च जर्नल,** वॉल्यूम–1, नं. 1, सितम्बर–अक्तूबर 2015, पृ. 111.

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची–

1- मोतीचन्द्र, **ट्रेड एण्ड ट्रेड रूटस इन एन्शिएंट इंडिया**, अभिनव पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 1977, पृ. 153.

2- उपिन्द्र सिंह, **दिल्लीः प्राचीन इतिहास,** ओरियंट ब्लैकस्वॉन, नई दिल्ली, 2010, पृ. 22–23.

3- गजानन माधव, **भारतः इतिहास और संस्कृति**, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014, पृ. 134–35.

4- आर.ई. फ्राईकेनबर्ग, **दिल्लीः थ्रू दॉ एजिज,** आक्सफोर्ड यूनि. प्रैस, दिल्ली, 1993, पृ. 233.

5. संजय कुमार, **चेन्जिंग ईलैक्ट्रोल पॉलिटिक्स इन इंडिया**, सेज पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 2013, पृ. 3.

6. आशीष कुमार, ''आम आदमी पार्टीः वर्तमान और भविष्य'', **कन्टेम्पररि सोशल इश्यूजः एन इंटरनेशनल रिसर्च जर्नल,** वॉल्यूम–1, नं. 1, सितम्बर–अक्तूबर 2015, पृ. 111.